REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2025

'संस्कृत की महत्ता, उपयोगिता एवं समृद्ध रोजगार के शाश्वत अवसर : एक विमर्श'

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
कार्यवाहक प्राचार्य, महामाया राजकीय महाविद्यालय, श्रावस्ती.

सामाजिक संस्कार,व्यक्ति परिष्कार व दोनों के समन्वित सद्विचार, सद्व्यवहार एवं सदाचार के निमित्त शिक्षा के समस्त स्वरूपों की आवश्यकता होती है,चाहे वह औपचारिक शिक्षा हो, अनौपचारिक या निरौपचारिक हो। शिक्षा का स्वरूप विभिन्न कालखण्ड में,देशगत पैमाने पर भिन्न प्रकृति का रहा है।हर देश का,वहां की परिस्थिति व संस्कृति के अनुसार उनका अपना शैक्षिक ढांचा व मापदण्ड रहा है,तद्तद् देशों की शैक्षिक वातावरण की चर्चा करना सर्वथा असम्भव है।

भारतीय पृष्ठभूमि में ही यदि इसकी चर्चा की जाय तो वह ही अत्यंत विस्तृत व भिन्न-भिन्न प्रकृति की रही है। भारतीय भूभाग में ही प्रचलित शिक्षा के प्रविधियों, प्रवृत्तियों आदि पर समग्र विमर्श असंभव है।समय-समय पर इतनी भाषाएं, उपभाषाएं,विषयें,उपविषयें आदि ने जितना सुविस्तृत ज्ञान-संसार सृजित किया कि उनका कोई अवार-पार ही नहीं है। फिर भी इन सबके मध्य में ज्ञान-विज्ञान के क्षितिज में जो सर्वसम्मति से सर्वसमादृत रही है वह **संस्कृत भाषा** है जिसका आश्रय लेकर समस्त विषयगत भारतीय रचना-संसार की आधारशिला रख, उसे बृहद् प्रासाद का रूप दिया गया।ऐसा कोई भी भारतीय रचनाकार,कवि, मनीषी, तत्वज्ञानी आदि नहीं है जो संस्कृत भाषा में निबद्ध ग्रन्थों से अपनी कृति आदि के लिए विचार, सिद्धान्त आदि न लिया हो क्योंकि ज्ञान के प्रत्येक विधा,चाहे वो **गणित, भौतिकी, रसायन, वास्तुशास्त्र,धातुशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, साहित्य, दर्शन शास्त्र, योगशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र, कामशास्त्र,नीतिशास्त्र, पाकशास्त्र, संगीतशास्त्र,शल्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, विमानशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, अर्थशास्त्र, वाणिज्यशास्त्र, कृषिशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र, सैन्यशास्त्र,आभियान्त्रिकी** एवं **ज्ञात-अज्ञात जो भी शास्त्र** हो-सबका यथोचित वर्णन **संस्कृत भाषा** में ग्रथित है जिसको भिन्न-भिन्न भाषाओं आदि में विचारकों ने स्थान देकर महिमा-मंडन किया है और आज भी वहीं से आधार लेकर उसे विविध रूपों में प्रचारित व प्रसारित कर रहे हैं।केवल संस्कृत में विकसित व लिखित ग्रन्थों की विषयगत अनुक्रमणिका प्रस्तुत कर दी जाये तो

उसका ही पार पाना कठिन है, इसके विस्तृत अध्ययन के लिए **शिवराम वामन आप्टे** के कोश ग्रन्थ 'अनुक्रमणिका'परिशिष्ट का अध्ययन आवश्यक है जहां पर अतिप्रचलित **ग्रन्थों का उल्लेख** है। इसके अतिरिक्त बहुत से अन्य पुरातन व नवीन मेधावियों के रचनासंसार का तो नाम ही नहीं लिया गया है वहां पर । कहने का आशय मात्र इतना है कि हर संभावित पहलुओं पर कवियों आदि ने अपनी तीव्र प्रज्ञा से संस्कृत भाषा को सुसमृद्ध बनाया है।

इस तरीके से **संस्कृत भाषा** भारतीय परिमंडल में एक सर्वाग्रही भाषा के रूप में अपनी जड़ जमायी हुई है।और तो बात ही छोड़ दें केवल **वैदिक वाङ्मय, रामायण, महाभारत,अष्टादश पुराण का ही अध्ययन कर लिया जाय तो व्यक्तित्व में अलौकिकता का चमत्कारी स्वरूप स्वयं प्रतिभासित होने लगता है।इस भाषा के अध्ययन से मनोवैज्ञानिक धरातल पर जबर्दस्त फायदा होता है। तथ्यों का विश्लेषण करने में सहजता व सरलता की प्राप्ति होती है। व्यक्ति के स्वास्थ्यगत पैमाने पर इसके अध्ययन से उच्चारण की स्पष्टता, स्मरण शक्ति में वृद्धि व अन्य मानसिक लाभ जो व्यक्ति को पूर्णता प्रदान करते हैं की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।**

यह बात सत्य है कि मानव की यह प्रवृत्ति होती है कि वह जिससे ज्यादा लाभ उठाता है पश्चात् में चलकर उसे ही तिरस्कृत करते हुए,पैरों से रौंदते हुए, अपमानित करते हुए आगे बढ़ जाता है।इसी बात को लक्ष्य में रखकर कविकुलगुरु **कालिदास** ने कहा है कि **अति परिचयादवज्ञा भवति** अर्थात् ज्यादा परिचय हो जाने पर अवज्ञा होने लगती है।वही आज संस्कृत के साथ जनमानस कर रहा है।आज शिक्षा का स्वरूप आध्यात्मिक या नैतिक भावों से कटकर **सर्वथा भौतिक** होता जा रहा है। बदलते परिवेश में व्यावसायिक शिक्षा का प्रचलन प्रभावी है,अब अर्थकरी विद्या सबके मूल में है अब, लेकिन एक बात यह भी है कि-

अन्तो नास्ति पिपासाया: सन्तोषं परं सुखम्।तस्मात् सन्तोषमेवेह परं पश्यन्ति पण्डिता: अर्थात् पिपासा का अन्त नहीं है, सन्तोष ही सुख का परम साधन है, इसलिए सन्तोष को ही जो इस लोक में सर्वत्र देखता है वही ज्ञानी है। परन्तु अब समाज-दृष्टि में यह सब बेमानी है।आज अर्थ ही परम संचालक व चरम प्रापक है।इसी अर्थ को दृष्टिगत रखते हुए यह निवेदित करना है कि भले ही आज नूतन विषयों से संबलित शिक्षा व्यवस्था का प्रचलन होता जा रहा है,नित-नित नये-नये पाठ्यक्रम कालेजों, विश्वविद्यालयों, संस्थानों आदि में जड़े जमाते जा रहे हैं परन्तु जहां तक बात भारतीय भाषा का है तो भले ही हिन्दी का विरोध भारत के भूभागों में होता है लेकिन संस्कृत सर्वस्वीकार्यता के स्तर पर सघनीभूत है, कोई भी राज्य इसका प्रत्यक्ष विरोध नहीं करता।इस दृष्टिकोण से संस्कृत सही मायने में राष्ट्रीय भाषा है।वैसे भी त्रिभाषाधारित सूत्र पर देखें तो समग्र भारत में एक विदेशी भाषा अंग्रेजी के साथ-साथ सम्बन्धित प्रान्त के साथ तृतीय भाषा के रूप में संस्कृत अतीव वैज्ञानिक, उपयोगी व ज्ञानप्रद भाषा है।

यदि आपका कोई भाई,बहन, मित्र अथवा परिचित शैक्षणिक दिशा में बी.ए. में प्रवेश लेते समय हिन्दी विषय को चुनता है तो उसे अवश्य रूप से संस्कृत विषय संयोजन हेतु लेने के लिए कहें क्योंकि संस्कृत के बिना हिन्दी विषय की विशिष्ट सार्थकता नहीं बनती है, कुछ अपूर्णता का एहसास होता है। अनेक नौकरियों में हिन्दी के साथ संस्कृत का गठजोड़ निर्धारित है। स्नातक में हिन्दी के साथ संस्कृत का योग होने पर नौकरी के लिए बेहतर विकल्प व अवसर उपलब्ध होते हैं।साथ ही भाषायी परिपक्वता आदि में वृद्धि होती है।

संस्कृत में रोजगार अन्य कलावर्ग के विषयों से घोषित तौर पर ज्यादा है,बस उसका थोड़ा विकेन्द्रीकरण व व्यापक दृष्टिकोण जरूरी है।आइये चर्चा करें-

1--योग में बड़ा रोजगार- व्यक्ति का सबसे बड़ा लाभ व लक्ष्य होता है शारीरिक व मानसिक आरोग्यता तत्पश्चात् आध्यात्मिक समुन्नति व पारमार्थिक प्रगति।इन विशिष्टताओं को प्राप्त कराने का सर्वाधिक या सर्वोत्तम प्रविधि है **यौगिक साधना** ।यही कारण है कि योग भारतीय बौद्धिक क्षितिज में समादृत जीवन दर्शन के स्तर को प्राप्त किया।योग का आश्रय सामान्य आभ्यासिक प्रक्रिया से प्राप्तव्य है, इसमें जटिलता आदि का अभाव है, कोई भी व्यक्ति अंग संचालन व परमात्मा-स्मरण से त्रिविध तापों से रहित हो,परम शान्ति को प्राप्त कर सकता है।साथ ही साथ यदि कोई योग में विशेष योग्यता से युक्त होना चाहता है तो उसके लिए हमारे मनीषियों,योगाचार्यों ने उस काल में प्रचलित भाषा संस्कृत का उपयोग कर योग के सिद्धांतों को अत्यंत ही कुशलता के साथ उपबृंहित किया। कुछ अति प्रचलित यौगिक ग्रन्थों का नामोल्लेख अग्रवत् है- **पातञ्जल योगसूत्र,घेरण्ड संहिता,** हठयोगी श्री गोरखनाथ जी का **गोरक्षशतक, श्रीमद् भगवद्गीता,**स्वामी स्वात्माराम का **हठयोग प्रदीपिका** व **वशिष्ठ संहिता** । सबसे पहले संक्षेप में हम जान लें कि योग का निर्गलितार्थ क्या है?प्राचीन मनीषियों ने सामान्यतः किस रूप में व्याख्यायित किया है,कितना व्यापक चिन्तन है भारतीय यौगिक परंपरा। निम्नलिखित सूत्र वाक्य संग्रहणीय,मननीय व अनुसरणीय,तद्यथा-

1. महर्षि पतंजलि मतानुसार- "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" (पतंजलि.यो.सू. ½)

अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।

2. **श्रीमद्भगवत्गीता** के अनुसार"**योगः कर्मसु कौशलम्"**(गीता 2/50)अर्थात् कर्म करने की कुशलता ही योग है।"**समत्वं योग उच्यते"** (गीता 2/48)अर्थात् सुख-दुःख, हानि- लाभ, सफलता- असफलता आदि द्वन्द्वों में सम रहते हुए निष्काम भाव से कर्म करना ही योग है।

"दुःख संयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम्" (गीता 6/23)अर्थात् जो दुःख रूप संसार के संयोग से रहित है उसका नाम योग है।

3.**महोपनिषद्** के अनुसार -**"मनः प्रशमनोपायो योग इत्यभिधीयते"** (महो0 5/42)अर्थात् मन के प्रशमन के उपाय को योग कहते हैं।

4-**महर्षि याज्ञवल्क्य** के अनुसार-**"संयोग योगयुक्तो इति युक्तो जीवात्मा परमात्मनो।"अर्थात्** जीवात्मा और परमात्मा के मिलन को ही योग कहते हैं।

5-**कैवल्योपनिषद्** के अनुसार-**"श्रद्धा भक्ति ध्यान योगादवेहि"अर्थात्** श्रद्धा, भक्ति, ध्यान के द्वारा आत्मा का ज्ञान ही योग है।

6. **विष्णुपुराण** के अनुसार-**"योगः संयोग इत्युक्तः जीवात्मा परमात्मनो।"अर्थात्** जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतः मिलन ही योग है।

योग दर्शन के प्रतिष्ठापक आचार्य महर्षि पतंजलि हैं,वे बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे, अतः समन्वित रूप से अधोलिखित श्लोक में उनके व्यक्तित्व व कृतित्व का नमन किया गया है-

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मे शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत् तत् प्रवरं मुनीनां पतंजलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि।।

अर्थात् योग से चित्त या मन की, पद या व्याकरण से वाणी की और वैद्यक या आयुर्वेद से शरीर की अशुद्धियों को,जिन्होंने दूर करने का कार्य किया उन योगमुनि पतंजलि को बारम्बार प्रणाम करते हैं।

आज योग की महत्ता दिनोदिन बढ़ती जा रही है।आज योग रोज़गार का बड़ा माध्यम बनता जा रहा है।योग में **स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर पर बहुत से डिग्री, डिप्लोमा आदि** कोर्सेज शुरु हो गये हैं। उदाहरण के लिए केवल **बाबा रामदेव व आचार्य बालकृष्ण जी** को ले लें, जिन्होंने योग व आयुर्वेद को अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया है।ऐसा कोई देश व वहां का प्रबुद्ध नागरिक नहीं है जो इन दोनों के कार्यकलापों से परिचित नहीं हो। सही मायने में इन लोगों ने प्राचीन जीवन पद्धति को आधुनिक युग में प्रतिष्ठापित किया है,यह इनके संस्कृत ज्ञान के कारण ही है। अतः इस दिशा में और सोचने की आवश्यकता है।यही कारण है हम सब 21 जून को **अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस** के रूप में प्रतिष्ठा दिला पाये हैं।अभी हाल में हम लोगों ने **नवम् अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस** मनाया है। अमेरिका जैसे देशों में भी इसकी प्रतिष्ठा दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है।अभी विगत **कोरोना काल** में हम लोगों ने देखा कि कैसे पूरी दुनिया इस महामारी के भीषण चपेट में थी, जिसने सबको तबाह किया लेकिन हमारा देश **योग व आयुर्वेद** के सिद्धांतों व व्यावहारिक क्रियाकलापों से बहुत अंशों तक अपने को बचाया, अपेक्षाकृत जनहानि कम हुई।यह योग की ताकत ही थी। अतः जिनकी रुचि इस तरफ है वह संस्कृत का अध्ययन करके इसके वास्तविक मूल्यों के जानकार हो,लोक के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

अतः:व्यक्ति के मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य की सर्वोच्चता के लिए हमें निरंतर योग को अपनाना चाहिए।यदि हम सक्रिय रहेंगे तो निश्चित रूप से हमारा जीवन खुशहाल रहेगा और खुशहाल व्यक्ति ही सामाजिक प्रसन्नता का कारण बनता है। ऐसे वातावरण में ये यौगिक क्रियाएं हैं जो उसे जीवन्तता, अनुशासन, दृढ़ता प्रदान करती हैं ताकि उसका जीवन सक्रियता, सकारात्मकता का पर्याय बन सके, एतदर्थ वैषयिक ज्ञान मार्गदर्शक होगा जो व्यक्ति को वास्तविक ज्ञान रखने पर वैश्विक प्रसिद्धि व प्रतिष्ठा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है।

2-आयुर्वेद में बड़ा रोजगार-

आयुर्वेद की भारतीय संस्कृत्याश्रित पद्धति पूर्णतया **संस्कृत भाषा** आधारित है। चिकित्सा के जिस तरह आज अनेक मार्ग उपलब्ध हैं,जिसे हम अंग्रेज़ी चिकित्सा पद्धति कहते हैं,उस तरह की रूपरेखा प्राचीन भारत में नहीं थी। चिकित्सा के लिए **आयुर्वेद** ही सशक्त माध्यम था। जैसा कि इसके नाम से ही पता चलता है कि आयु को या जीवन को जानना ही आयुर्वेद है। कहने का आशय है कि हमारे आयुर्वेदाचार्यों ने ऐसे पद्धति का विकास कर लिया था कि उससे व्यक्ति की जीवन प्रत्याशा में अभूतपूर्व वृद्धि हो सकती थी।इस दिशा में बहुत से ऋषियों ने अपने-अपने शोध, प्रयोग आदि के माध्यम से सामाजिक आरोग्यता को सुनिश्चित किया।यदपि आयुर्वेद का प्रारंभ हमें ऋग्वेद से ही मिलता है तथापि इसका पूर्ण विकास अथर्ववेद में प्राप्त होता है,यही कारण है कि आयुर्वेद, अथर्ववेद का ही एक उपवेद है। आयुर्वेद के कुछ प्रमुख आचार्य व उनकी कृति का उल्लेख प्रासंगिक होगा। आयुर्वेद की उत्पत्ति अति पहले ही हो गई थी,इसकी आचार्य परंपरा का स्रोत अग्रवत् है,**अश्विनकुमार,इन्द्र,धन्वंतरि,काशिराज दिवोदास, नकुल,सहदेव,अर्कि,च्यवन,जनक,बुध, जावाल,जाजलि,पैल,करथ, अगस्त्य, भारद्वाज,अत्रि** उनके छः शिष्य-**(अग्निवेश, भेड़,जातुकर्ण, पराशर,सीरपाणि,हारीत),सुश्रुत एवं चरक,**तथापि इसको

प्रसिद्धि के शिखर पर ले जाने में जिन ग्रन्थों का महत्वपूर्ण योगदान है उनका नामोल्लेख अग्रवत् है यथा,**चरक संहिता, सुश्रुत संहिता**, आचार्य वाग्भट का **अष्टांग संग्रह,अष्टांग हृदयम्,माधव निदान,शारंगधर संहिता, भाव प्रकाश, कश्यप संहिता ।**

आज के युग में संस्कृत का सांगोपांग अध्ययन करके लब्धप्रतिष्ठित आयुर्वेदाचार्य बना जा सकता है,अतःसंस्कृत में रोजगार का बड़ा क्षेत्र है आयुर्वेद।इसके प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी हम सबको उठानी चाहिए।

3-वास्तुविद् के रूप में बड़ा रोज़गार-फलक –

संस्कृत में लिखा गया है कि **'गृहस्थस्य क्रियास्सर्वा न सिद्ध्यन्ति गृहं विना'** ।संस्कृत भाषा व उसमें लिखित साहित्य सामग्री के अन्तर्गत वास्तुशास्त्र का भी अपना महत्व है।यदि कोई व्यक्ति वास्तुशास्त्र में रुचि रखता है तो उसके लिए इस प्रकरण पर लिखी गई पुस्तकों का अध्ययन अनिवार्य है। वास्तुशास्त्र का सर्वप्रथम कथन श्री **शंभु ने पराशर को,पराशर ने बृहद्रथ को,बृहद्रथ ने विश्वकर्मा** को किया जिन्होंने इसे बृहद् रूपों में अन्यों को कराया। दक्षिण भारत में **मय** के मत का प्रचार हुआ तो उत्तर भारत में ज्यादातर **विश्वकर्मा** जी के मत का। कुछ प्रमुख ग्रंथों का उल्लेख निम्नवत् है यथा,**मयमतम्,मयदीपिका,काश्यपशिल्पम्, मानसारम्, ईशानशिवगुरुपद्धति, शिल्परत्नम्, सनत्कुमारवास्तुशास्त्रम्, अगस्त्यवास्तुशास्त्रम्, सकलाधिकार, शिल्पकौमुदी,तन्त्रसमुच्चयम्, विश्वकर्मावास्तुशास्त्रम्, विश्वकर्मीयम्, कूपप्रशनम्, वास्तुतन्त्रम्, देवालयचन्द्रिका, मानववास्तुलक्षणम्,तच्चुशास्त्रम्, मनुष्यालयसोपानम्, गृहनिर्माण पद्धति, शिल्पचन्द्रिका, वास्तुविद्या,समरांगणसूत्रधार** आदि बहुत से ग्रन्थ हैं जिनका सूक्ष्म अनुशीलन संस्कृतसेवी ही कर सकता है, अतःसंस्कृत का वैषयिक ज्ञान वास्तु के क्षेत्र में रोजगार का बड़ा अवसर है।

३-बेहतर संस्कृत, विदेशी रोजगार का साधन।

4- सुयोग्य ज्योतिषीय ज्ञान रोजगार का बड़ा साधन-

ज्ञान-विज्ञान का बड़ा भारतीय संस्कृत भाषा का फलक उसका ज्योतिष विद्या की परंपरा है। इसीलिए वेदों के सम्यक् ज्ञानानुशीलन में जिन छः अंगों का उल्लेख है, जिन्हें हम वेदाङ्ग कहते हैं के अन्तर्गत ज्योतिष भी परिगणित होता है। आचार्य लग्न को ज्योतिष का प्रतिष्ठापक माना जाता है। ज्योतिष के जो मुख्य भाग हैं वे **क्रमशः वेदांग ज्योतिष, सिद्धांत ज्योतिष या गणित ज्योतिष, फलित ज्योतिष,अंक ज्योतिष, खगोलशास्त्र** है।संस्कृत में ज्योतिष का क्षेत्र कितना बड़ा है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों आदि में बाकायदा ज्योतिष विभाग की स्थापना व प्राध्यापकीय श्रृंखला का होना इस बात का सबल प्रमाण है कि ज्योतिष रोज़गार का बड़ा प्रकल्प है।

विचारणीय है कि युधिष्ठिर के जमाने से जो पञ्चांग बनता आ रहा है,उसकी इतनी सटीक कालगणना होती है कि रत्ती भर भी तिथि,मास,तीज,त्योहार आदि में कोई अन्तर नहीं होता ।यह विज्ञान का बड़ा रहस्य नहीं है तो और क्या है? आज हम देखते हैं कि सनातनियों का कोई भी मांगलिक आदि कृत्य नहीं होता जिसमें ज्योतिष की आवश्यकता न पड़ती हो।आज कम्प्यूटर के जमाने में ऐसे -ऐसे साफ्टवेयर विकसित हो गये हैं कि जो संस्कृत तनिक भी नहीं जानता, यहां तक कि साइबर कैफे वाले रहमान,एहसान,अली, मोहम्मद आदि भी झट से कुण्डली का मिलान करके हार्डकॉपी दे दें रहे हैं। आखिर ज्योतिष की

महत्ता कितनी बढ़ गई है। ज़रा विचार कर लें कि यदि इस विद्या में पारंगत तो कोई संस्कृतज्ञ ही हो सकता है। यदि उसने इसका समुचित दिशा में प्रयोग कर सही-सही काल गणना करने लगता है तो किस हद तक रोजगार उसके लिए बन सकता है?इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। आज के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के दौर में लगभग प्रत्येक टीवी चैनल व प्रिण्टेड अखबारों में राशिफल से जुड़े हुए भविष्य कथन का प्रसारण व विचारण सहजता से किया जा रहा है। टी.वी.पर आपके शुभ-अशुभ मुहूर्त का तीव्रता से उद्घोष करता ज्योतिषाचार्य को आप रोज देख सकते हैं। यह केवल संस्कृत भाषा के ही बदौलत संभव है। ऐसा नहीं है कि ज्योतिष कोई मनगढ़ंत कहानियों का पुलिंदा है बल्कि इसका सुसमृद्ध रचा व लिखा ग्रन्थ आदि का संसार है। प्रमुख ग्रंथ इस प्रकार हैं- **बृहद् जातक,बृहद् पाराशर, होरा शास्त्र,सारावली,जातक पारिजात,फल दीपिका, उत्तर कालामृत,लघु पाराशरी, जैमिनी सूत्र,प्रश्न मार्गादि, सूर्य सिद्धान्त,भाव प्रकाश,मान सागरी** आदि।

इस प्रकार ज्योतिषीय ज्ञान प्राप्त करके कोई भी बेहतर रूप से प्रतिष्ठित हो सकता है परन्तु उसके लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन प्राणतत्व है।

5-पौरोहित्य का बड़ा प्रकल्प प्रवर्तमान है रोज़गार का बृहत्तर क्षितिज-

भारतीय समाज सनातनी समाज है, सकारात्मकता, आस्तिकता,मानवता,ममता,दया आदि इसके मूल सिद्धांत हैं। ऐसा होना भी उचित है क्योंकि नितांत भौतिकवादी समाज नैतिकता व आध्यात्मिकता को धीरे-धीरे खो देता है। आज हम देखते हैं कि कोई भी कार्य शुभ या मांगलिक कार्य करने के पहले शगुन विचारना सामाजिक वास्तविकता है। साथ ही वर्ण व्यवस्था में उच्च पायदान पर अधिष्ठित ब्राह्मण वर्ण को ऐसा विचार करने का नैसर्गिक अधिकार प्राप्त है। हां आजकल प्रतिक्रियावादी हिन्दू समाज में कुछ वर्ण या जाति के लोगों ने कुछ अलग पद्धति स्वीकार कर ली है। परन्तु किञ्चित् भेद के साथ भाषा संस्कृत ही है। चाहे पूर्व हो या पश्चिम या दक्षिण या हो उत्तर। संयोग की बात देखलें कि भले वह हिन्दी का धुरविरोधी दक्षिण का नागरिक है लेकिन संस्कृत के प्रति उसका अनुराग उतना ही दृढ़ है। सही मायने में हम कह सकते हैं कि संस्कृत भाषा का जानकार व्यक्ति भारत के किसी भी कोने में है तो पौरोहित्य प्रकल्प से प्रतिष्ठासह पर्याप्त आय अर्जित कर सकता है। हम देखते हैं कि षोडश संस्कार का प्रत्येक स्तर बिना पुरोहित के संपूर्ण नहीं होता। देश में लाखों छोटे- बड़े मंदिर,मठ, पूजा गृह, धर्मशालाएं, तीर्थस्थल आदि हैं वहां करोड़ों की संख्या में वरीयता क्रम से संत, महात्मा आदि है, उसमें कुछ पारंपरिक हैं,भले उन्हें संस्कृत का औपचारिक ज्ञान नहीं है परन्तु उतनी इस भाषा को जानते हैं जिससे वे प्रतिष्ठा अर्जित कर सकते हैं। लेकिन जो पारम्परिकता के साथ-साथ सैद्धांतिक भी हैं,उनकी प्रोन्नति होते-होते वे शंकराचार्य तक की पदवी प्राप्त कर लेते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पौरोहित्य का प्रकल्प बड़ा है। आज इसका थोड़ा और विकेन्द्रीकरण कर दिया जाता तो और जातियों आदि के लोग इस क्षेत्र में आजीविका प्राप्त कर सकते हैं,फिर भी चोरी छिपे कुछ अन्य लोग रोजगार पा भी रहे हैं।

अत: संस्कृत भाषा का इस दिशा में काफी अवसर है, एतदर्थ संस्कृत हमारे अध्ययन के मूल में होनी चाहिए।

6-हिन्दी में माध्यमिक कक्षाओं में बिना संस्कृत विषय संयोजन के अध्यापन-पेशे में कठिनता प्रतीत होती है-

शिक्षा का क्षेत्र बहुत बड़ा है, भाषा ज्ञान की उपयोगिता आवश्यक होती है। हिन्दी भाषी क्षेत्र में माध्यमिक कक्षाओं में अध्यापन हेतु बहुत से अध्यापकों की नियुक्ति होती है जहां पर संस्कृत को एक विषय के तौर पर चयनित करने वाला अभ्यर्थी

ही आवेदन के योग्य होता है।अत:इस विषय का चयन करना हिन्दी अध्यापक हेतु जरूरी योग्यता है। रोजगार का एक अवसर इस तरफ भी है।

7-प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालयीय अध्यापन परिक्षेत्र में विषद् रोजगार का सुअवसर-

जिस तरीके से अन्य विषयों में अध्यापन आदि का रोजगार प्रत्येक स्तर पर होता है तथैव। इस भाषा के क्षेत्र में भी है।यह तो रोजगार का सर्वथा पारंपरिक व लाभकारी क्षेत्र है ही बस आवश्यकता होती है कि विद्यार्थी इसके सूक्ष्म से सूक्ष्मतर ज्ञान से सुपरिचित हो वह अवसरानुसार इसका प्रस्तुतीकरण कर ले जाय तो उसे यह भाषा रोजगार से युक्त बना देगी।

8-यू.जी.सी.जे.आर.एफ. उत्तीर्ण करने से आत्मनिर्भरता में वृद्धि-

यदि कोई विद्यार्थी धनाभाव के कारण अपनी उच्च शिक्षा व रोजगार की पूर्ति नहीं कर पा रहा है तो वह **परास्नातक उत्तरार्ध में** प्रवेश लेते ही अगर समर्पित होकर यूजीसी जेआरएफ उत्तीर्ण कर ले तो आज के युग में उसे तीस-पैंतीस हजार रुपए प्रतिमाह अध्येतावृत्ति प्राप्त होने लगेगी व उसके सपनों को पर लग जायेंगे,उनको प्राप्त करने की उसकी अभिलाषा निकट भविष्य में पूर्ण हो जायेगी।जिस प्रकार से अन्य विषयों में इसकी व्यवस्था है,उसी प्रकार से इस भाषा में भी है।

9-सेना में धर्मगुरु की नौकरी –

देश सेवा हेतु रत सैनिकों में आस्तिकता आदि का भाव अनवरत बना रहे,इस हेतु वहां भी मंदिरों आदि की व्यवस्था है ताकि सैनिक गण पूजा-अर्चना आदि के माध्यम से अपने हौसले को सदैव बनाये रखें,इस हेतु ही संस्कृत के जानकार लोगों को धर्मगुरु के पद पर स्थापित किया जाता है व उन्हें कमीशण्ड पद पर(अधिकारी रैंक) में रखा जाता है।जो शारीरिक रूप से सक्षम हैं यदि थोड़े भी जागरूक होकर संस्कृत सीख लें तो उनके लिए बिना किसी जाति धर्म के भेदभाव के धर्मगुरु का पद पा सकते हैं।

10-सिविल सेवाओं,अन्य केन्द्रीय व राज्यस्तरीय परीक्षाओं ,यहां तक निजी क्षेत्र के प्रतियोगी परीक्षा में हिन्दी माध्यम से उत्तमोत्तमोत्तर देने का माध्यम है संस्कृत भाषा –

बदलते परिवेश में छोटे से लेकर बड़े तक,ऐसा कोई सरकारी नौकरी का फलक नहीं है जहां चरणबद्ध प्रतियोगिता का प्रावधान नहीं है।हर परीक्षा में उत्तर देना ही है। उत्तर देने के लिए आपके पास समृद्ध शब्दकोश होना चाहिए साथ ही उसे सुगठित वाक्यों में अभिव्यक्त करने की सामार्थ्य भी जो निश्चित रूप से उन प्रतियोगियों की बेहतर होती है जो संस्कृत के व्याकरण विज्ञान से परिचित हैं।ये बात पूर्णत: सच है कि व्याकरणिक निष्पन्नता का सबल हेतु संस्कृत भाषा ही। दुनिया में इतना वैज्ञानिक व्याकरण शायद ही किसी भाषा का हो।कहने का आशय यह है कि पद, वाक्य आदि विचार के लिए,सन्धि,समास आदि के लिए एक प्रतियोगी को इसकी शरण लेनी ही पड़ेगी।अत:किसी भी प्रतियोगी परीक्षा का जो लिखित पक्ष है उसमें सफलता का आधार निश्चयेन व्याकरणिक वैशिष्ट्य की अपेक्षा रखता है।इसी के साथ ही साथ **साक्षात्कार** भी प्रतियोगी परीक्षा का एक महत्वपूर्ण चरण है जिसे कहते तो हम व्यक्तित्व परीक्षण हैं परन्तु उसमें आपकी संप्रेषणीयता बड़ा ही कारगर भूमिका

निर्वहन करती है।आपका जैसा विशिष्टार्थों से संयुक्त,संवलित शब्द सौष्ठव होगा,वैसा ही गहरा प्रभाव परीक्षण कर्ताओं पर पड़ेगा,उसी से आपका मूल्यांकन होगा और वह सही मायने में यदि आप हिन्दी माध्यम के प्रतियोगी हैं तो तब पूर्ण सिद्धि को प्राप्त होगा जब आप संस्कृत सेवक रहे हैं।इस प्रकार परीक्षा उत्तीर्ण करने की दृष्टि से इस भाषा का अद्भुत् महत्त्व है ।

11-समाज को सुसंस्कृत करने हेतु प्रसंस्कृत मानवसंसाधन देने की सबसे बड़ी स्रोत है संस्कृत भाषा-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है,जिस समाज में वह रहता है,उस समाज को उससे बड़ी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अपेक्षाएं रहती हैं और रहनी भी चाहिए क्योंकि सबकी समष्टि ही तो समाज का निर्माणक तत्त्व होता है। समाज के लोग जिस चाल-चलन के होंगे उसी प्रकार का सामाजिक संगठन होगा।यह बात हम बिना किसी पूर्वाग्रह के कह सकते हैं कि सही अर्थों में जो संस्कृत का जानकार होगा, संस्कृति का सबल अवलंबक होगा क्योंकि संस्कृति का का आधार संस्कृत है। उदाहरण के लिए हम अपने परिवेश के ले लें जहां हम रहते हैं वहां यदि कोई संस्कृतज्ञ होगा तो उसकी छवि, जीवनशैली आदि कुछ भिन्न होगी।वह आस्तिकता से युक्त होगा, सकारात्मकता उसकी पहचान होगी वह आध्यात्मिकता उसका पर प्रदर्शक होगा।अतः सुसंस्कृत जन समाज के लिए वरदानवत् होता है।

इस प्रकार संस्कृत भाषा के महत्व, उपयोगिता एवं रोजगार के समस्त आयामों का विश्लेषण, विमर्श सहज नहीं है। उपर्युक्त शब्दों की अभिव्यक्ति तो मात्र एक दृष्टांत है।इस भाषा का महत्व तो इसी से लगा सकते हैं कि यदि किसी को समाज में पद प्रतिष्ठा का ऊंचा स्थान प्राप्त करना है तो उसे संस्कृत का आश्रय लेना ही पड़ेगा। आज राजनीति में कोई उच्च स्थान प्राप्त करना चाहता है तो उसे संस्कृत की उच्च कोटि की समझ होनी ही चाहिए क्योंकि राजनीति में आपकी समझ व उसकी जनता के मध्य संप्रेषणीयता बहुत ही सबल व सफल माध्यम है जो राजनेता ऐसा करने में सक्षमता प्राप्त कर लेता है उसकी सर्वग्राह्यता, सर्वस्वीकार्यता बढ़ जाती है।यही कारण है कविकुलगुरुकालिदास ने अपने रघुवंशम् में प्रार्थना श्लोक में ही लिख दिया है-

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।
जगत:पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।[1]

अर्थात् शब्द व अर्थ में दक्षता के बिना सुपात्रता दुर्लभ है और संस्कृत के सेवन के बिना शाब्दिक व अर्थाश्रयी निष्पन्नता असंभव है।इस प्रकार संस्कृत का अध्ययन हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण आयाम होना चाहिए।

शोध-पत्र सहायक सामग्री –

1-कालिदास ग्रन्थावली
2-धर्मशास्त्र का इतिहास -भारत रत्न पी.वी.काणे, अनुवादक, अर्जुन चौबे
3-संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर

[1] **रघुवंशम्-कालिदास।**

4-महाभारत -गीता प्रेस, गोरखपुर
5-संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – डॉ कपिल देव द्विवेदी
6-संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय
7-स्वानुभव व विस्तृत प्रेक्षण